उत्तर

HINDI A

Class 10 - हिंदी ए

खंड क - अपठित बोध

1. 1. iii. कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   2. i. कथन I, II और IV सही हैं।
   3. (i. I (1), II (2), III (3)
   4. नेपाल एक पहाड़ी इलाका है तथा वहाँ पहाड़ों पर पर्याप्त समतल ज़मीन नहीं होने से कृषि व अन्य रोजगार के साधन भी सीमित होते हैं जिसके कारण पुरुष नीचे मैदानी इलाकों में कमाने के लिए जाते हैं और घर परिवार की सारी ज़िम्मेदारी महिलाओं पर आ जाती हैं। गाँव की महिलाएँ खेती व शहरी महिलाएँ व्यवसाय सँभालती है।इस तरह हम कह सकते हैं कि औरतें ही नेपाली अर्थवयवस्था का आधार है।
   5. काठमांडू से लौटते समय लेखक ने रास्ते में बर्फ से ढँकी चोटियाँ, छोटे-बड़े नगर-गाँव और कस्बे देखे। घरों के बाहर कटी हुई मक्का की फसल के गुच्छे खूँटियों पर लटके देखे तथा राह में काली नदी बहती दिखाई दी।
2. i. (घ) उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में मजदूर की शक्ति का महत्व प्रतिपादित किया गया है।
   ii. (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   iii. (क) कथन I, III और IV सही हैं।
   iv. इसका अर्थ यह है कि 'मैं सर्वनाम शब्द श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा है। कवि कहना चाहता है कि मजदूर वर्ग में संसार के सभी क्रियाशील प्राणी आ जाते हैं।
   v. मज़दूर ने कहा है कि वह खंडहर को भी आबाद कर सकता है। उसकी शक्ति के सामने भूचाल, प्रलय व बादल भी झुक जाते हैं।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. सरल वाक्य
   ii. जिसे आपने पुरस्कार दिया था। (विशेषण आश्रित उपवाक्य)
   iii. जो बीस वर्षीय युवक नंगी चमचमाती तलवार घुमा रहा था, कह रहा था।
   iv. भारत के सामने मुख्य समस्या बढ़ती हुई जनसंख्या है।
   v. आशीष ने कहा कि वह प्रथम आयेगा।
   अथवा
   प्रधानमंत्री मोदी जी ने कहा कि देश को बुलंदी पर पहुँचाने के लिए सभी को एकजुट होना होगा।
4. i. **कर्मवाच्य:** अब गायकों द्वारा संगतकारों का आदर नहीं किया जाता।
   ii. **कर्तृवाच्य:** इस दिन दालमंडी में शहनाई बजती थी।
   iii. **भाववाच्य:** चिड़िया से चोट के कारण उड़ा नहीं जा रहा था।
   iv. **कर्तृवाच्य:** अब सो नहीं सकते।
   v. सात सुरों को उसके द्वारा गज़ब की विविधता के साथ प्रस्तुत किया गया | (कर्मवाच्य में)
5. i. **भोलानाथ:** व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन
   ii. **मूर्ति:** संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म
   iii. **सुना:** क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, भूतकाल
   iv. **जल्दी:** अव्यय, क्रिया विशेषण, 'चलो' क्रिया की विशेषता
   v. **गाड़ी में** - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'बिठाया' क्रिया से संबद्ध।
6. i. मानवीकरण अलंकार
   ii. अतिशयोक्ति अलंकार
   iii. उत्प्रेक्षा अलंकार
   iv. रूपक अलंकार
   v. रूपक अलंकार

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह! कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किंतु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज्यादा नजर रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज्यादा हकदार होते हैं। हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आंगन में एक चटाई पर लिटा कर एक सफेद कपड़े से ढँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं, फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग जला रखा है। और उसके सामने जमीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं। वही पुराना स्वर वही पुरानी तल्लीनता। घर में पतोहू रो रही है किंतु बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं। गाते-गाते, कभी-कभी पतोहू के पास जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने

SATISH SCIENCE ACADEMY

को कहते। आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात। मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किंतु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था - वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

(i) **(घ)** कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
व्याख्या:
कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ii) **(ग)** कुछ सुस्त और बोदा
व्याख्या:
कुछ सुस्त और बोदा

(iii) **(क)** कथन ii व iv सही है।
व्याख्या:
कथन ii व iv सही है।

(iv) **(ग)** उसकी बहू ने
व्याख्या:
उसकी बहू ने

(v) **(ग)** कथन ii व iii सही है।
व्याख्या:
कथन ii व iii सही है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) हालदार साहब ने जब मूर्ति के नीचे मूर्तिकार **मास्टर मोतीलाल** पढ़ा तब उन्होंने सोचा कि नगरपालिका के पास कम समय शेष होने के कारण किसी स्थानीय मास्टर को ही मूर्ति बनाने का काम सौंप दिया गया होगा। दूसरी ओर मूर्तिकार ने भी कम समय में मूर्ति बनाकर सौपने को के दिया होगा या हो सकता है कि मूर्तिकार के पास समय का अभाव रहा हो।

(ii) मन्नू भंडारी के बचपन के समय पूरा मोहल्ला उनका घर होता था। पर वर्तमान में ऐसा नहीं है। आज लोग अपने जीवन में इतने व्यस्त हो गए हैं कि सार्वजनिक जीवन से कटने लगे। वे आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं। आपसी सरोकार कम होते जा रहे हैं। आज की संस्कृति में लोग असहाय, अकेले और संकुचित होते जा रहे हैं। पड़ोस संस्कृति का तो अब नाम ही समाप्त होता जा रहा है।

(iii) सनक के दो रूप हो सकते हैं - सकारात्मक एवं नकारात्मक। सकारात्मक सनक का परिणाम भी सकारात्मक होता है जबकि नकारात्मक सनक का परिणाम किसी के लिए भी सुखदायक नहीं होता। गाँधीजी, भगत सिंह आदि स्वतंत्रता सेनानियों की देशभक्ति की सनक के कारण ही देश स्वतंत्र हो सका। इसके विपरीत नवाब साहब के द्वारा अपनी झूठी शान को बनाए रखने के लिए खीरों को केवल सूँघ कर ही फेंक देना उनकी नकारात्मक सनक थी।

(iv) मनुष्य अपने विवेक का प्रयोग करते हुए मैत्री-भाव से किसी नई वस्तु की खोजकर नए तथ्य के दर्शन करवा सकता है, जिसकी जानकारी समाज को पहले न थी। इस नए तथ्य की विशेषता यह है कि वह समूची मानवता के लिए कल्याणकारी होती है। इसकी खोज विश्वबंधुत्व की भावना से की जाती है।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।
किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

(i) **(ख)** दूसरे की दुर्बलताओं का मज़ाक बनाने में
व्याख्या:
दूसरे की दुर्बलताओं का मज़ाक बनाने में

(ii) **(घ)** निराशा व हताशा से
व्याख्या:
निराशा व हताशा से

(iii) **(क)** जीवन रूपी घड़ा
व्याख्या:
जीवन रूपी घड़ा

(iv) **(ग)** कवि के मित्रों ने
व्याख्या:
कवि के मित्रों ने

(v) **(घ)** मित्रों के प्रति विनम्रता
व्याख्या:

SATISH SCIENCE ACADEMY

मित्रों के प्रति विनम्रता

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:
    (i) हमारे पाठ्यक्रम में 'अट नहीं रही है' कविता फागुन के सौन्दर्य पर केन्द्रित है। इसमें फागुन के सौन्दर्य और उल्लास की बड़ी ही सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। इस सौन्दर्य को देखकर कवि का मन भी उल्लासमय हो जाता है और वह इस सौन्दर्य से अपनी नजर नहीं हटा पा रहा है।
    (ii) कवि के अनुसार फसलें पानी, मिट्टी, धूप, हवा और मानव श्रम के मेल से बनी हैं। इनमें विभिन्न नदियों के पानी की ताकत (जादू) समायी हुई है। विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की विशिष्ट विशेषताएँ (गुण-धर्म) छिपी हुई हैं। सूरज और हवा का प्रभाव समाया है। इन सबके साथ किसानों और मजदूरों का लगनशील श्रम व सेवा भी सम्मिलित है। इन सभी तत्वों के समेकित योगदान से ही कोई फ़सल तैयार हो पाती है।
    (iii) संगतकार की मनुष्यता कवि ने इस प्रकार रेखांकित किया है कि वह हमेशा स्वयं को मुख्य गायक के पीछे ही रखकर उसे अकेलेपन के अहसास से बचाता है और अपनी मनुष्यता बनाए रखता है। वह हर कदम पर मुख्य गायक के साथ होता है और उसे अपने मार्ग से भटकने नहीं देता है। वह मुख्य गायक को सदा ऊँचाई पर रखकर उसकी गरिमा को बनाए रखता है।
    (iv) गोपियों का मानना है कि राजधर्म यही है कि प्रजा को सताया नहीं जाए। कृष्ण अब पहले वाले कृष्ण नहीं रहे, कृष्ण को इस राजधर्म की याद दिलाने के पीछे उनकी यह आकांक्षा निहित है कि वे प्रेम की मर्यादा का निर्वाह करते हुए गोपियों से मिलने आएँ और उनकी विरह-व्यथा को शांत करें।

खंड ग - कृतिका (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:
    (i) बच्चा किसी भी परेशानी में अपनी माँ से सहारे और सांत्वना की उम्मीद करता है। माँ के साथ रहकर ही सुरक्षित अनुभव करता है। माँ के आँचल में उसे कष्ट का आभास नहीं होता। माँ उसकी भावनाओं को अच्छी तरह समझती है। वह चाहे अपने पिता से कितना भी प्रेम करता हो या पिता उसे कितना भी अधिक प्रेम करता हो, माँ की ममता और आत्मीयता की कोई तुलना नहीं होती। यही कारण है कि भोलानाथ संकट के समय अपने पिता के पास न जाकर माँ के पास जाता है।
    (ii) आलसी-लेखकों की प्रवृत्ति उन व्यक्तियों की तरह होती है जो सवेरा होने पर जग तो जाते हैं किंतु तब तक पड़े रहते हैं जब तक अलार्म न बज जाए। इसी प्रकार कुछ ऐसे भी लेखक होते हैं कि जब तक उनसे कहा न जाए, वे लिखते नहीं हैं। वे अपने भीतर की विवशता को तब तक प्रकट नहीं करते हैं जब तक बाह्य दबाव न पड़े।
    (iii) देश के नागरिक के मन में अपने देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने की भावना होती है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने देश के स्वाभिमान व गरिमा की रक्षा करते हुए देश के प्रति अपना प्रेम प्रकट करें। हमारा राष्ट्र है तो हम हैं। हमें अपनी जाति, धर्म, क्षेत्र, संप्रदाय से ऊपर उठकर राष्ट्र की सुरक्षा, एकता, सुंदरता व निर्माण के लिए मिलजुलकर कार्य करना चाहिए। हमें अपने राष्ट्र की सुरक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। अपने देश के समस्त नियमों व कानूनों का सत्यनिष्ठा से पालन करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। हमें अपने चारों ओर के वातावरण को साफ व स्वच्छ रखना चाहिए। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने पूरे देश को स्वच्छ बनाए रखें। हम मिलकर देश के अंदर भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई लड़ें व उसे समाप्त करें। चुनावों में अपने वोट का प्रयोग अवश्य करें। हमारे राष्ट्र का हर बच्चा, हर व्यक्ति शिक्षित होना चाहिए। हर क्षेत्र में लड़का, लड़की को समान अधिकार मिलने चाहिए। हमें अपने देश की सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाकर संरक्षित रखना चाहिए। हमें व्यर्थ समय बर्बाद न कर ईमानदारी से, राष्ट्र को विकास की तरफ ले जाने वाले कार्य करने चाहिए। हमारे अन्दर राष्ट्र-प्रेम की भावना कूट-कूटकर भरी होनी चाहिए तभी हम अपने राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य निभा पाएँगे और अपने राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जाएँगे।

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:
    (i) आत्मनिर्भरता का अर्थ है-स्वयं पर निर्भर होना। अपनी शक्तियों के बल पर व्यक्ति सदा स्वतन्त्र तथा सुखी जीवन जीता है। ईश्वर भी उसी की सहायता करता है, जो अपनी सहायता अर्थात् अपना कार्य स्वयं करते हैं। इसके विपरीत जिन लोगों को दूसरों का आश्रय लेने की आदत पड़ जाती है, वे उन लोगों और आदतों के गुलाम बन जाते हैं। उनके भीतर सोई हुई शक्तियाँ मर जाती हैं। उनका आत्मविश्वास घटने लगता है। संकट के क्षण में ऐसे पराधीन व्यक्ति झट से घुटने टेकने को विवश हो जाते हैं। जिन्हें छड़ी से चलने का अभ्यास हो जाता है, उनकी टाँगों की शक्ति कम होने लगती है। इसलिए अन्य लोगों की बैसाखियों को छोड़कर अपने ही बल-बूते पैर मजबूत करने चाहिए, क्योंकि संकट के क्षण में बैसाखियाँ काम नहीं आती। वहाँ अपनी शक्तियाँ, अपना रुधिर काम आता है। आत्मनिर्भर व्यक्ति ही नये-नये कार्य सम्पन्न करने की हिम्मत कर सकता है। वह विश्वासपूर्वक अपना तथा समाज का भला कर सकता है। वही स्वयं को स्वतन्त्र अनुभव करता है तथा गौरव से जी सकता है। आत्मनिर्भर व्यक्ति ही स्वाभिमान से जी पाता है। जब तक हम दूसरों के सहारे पर टिके हैं तब तक हमें सम्मान नहीं मिल सकता।
    (ii) **भूमिका**- ईश्वरीय सृष्टि की अद्भुत, अलौकिक रचना प्रकृति है। मनुष्य ने प्रकृति की गोद में आँखें खोली हैं एवं प्रकृति ने ही मनुष्य का पालन-पोषण किया है, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। उद्योगों के बढ़ने से वनों की कटाई बढ़ती जा रही है।

    वृक्षों से लाभ- मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन पेड़-पौधों पर आश्रित रहता है। पेड़-पौधों की लकड़ी विभिन्न रूपों में मनुष्य के काम आती है। वृक्षों से हमें फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ आदि प्राप्त होती हैं। शुद्ध वायु एवं तपती दोपहर में छाया वृक्षों से ही प्राप्त होती है। वृक्ष वर्षा में सहायक होते हैं एवं भूमि को उर्वरक बनाते हैं।

    वृक्षों की कटाई और उसके दुष्परिणाम- जनसंख्या के दबाव, शहरों का विस्तार, फैक्ट्रयों के लिए भूमि की कमी को दूर करने के लिए वृक्षों की व्यापक पैमाने पर कटाई मनुष्य के द्वारा की जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप प्रदूषण का बढ़ना एवं प्राकृतिक आपदाओं से विनाश का खतरा बढ़ता जा रहा है।

    वृक्षारोपण- देर से सही, मनुष्य ने वृक्षों के महत्व को स्वीकारा तो है। वन विभाग द्वारा नये वृक्षों का रोपण किया जा रहा है एवं पुराने वृक्षों का संरक्षण किया जा रहा है। लोगों को जागरूक करने के लिए वन महोत्सव प्रारम्भ किया गया है जो जुलाई मास में मनाया जाता है जिसमें व्यापक रूप से वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया जाता है।

SATISH SCIENCE ACADEMY

उपसंहार- आज आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य प्रकृति से जुड़े। यह समझे कि कुल्हाड़ी वृक्षों पर नहीं वरन् उसी पर चल रही है। हमारी संस्कृति में वृक्षों पर देवताओं का वास बताया गया है एवं वृक्ष काटना भयंकर पाप बताया है। वृक्षारोपण करने को महान् पुण्य बताया है।

(iii) आजकल की दुनिया में इंटरनेट ने हमारे जीवन को अद्वितीय तरीके से प्रभावित किया है। इसे तकनीक का एक अद्वितीय वरदान माना जा सकता है। इंटरनेट ने हमें एक नई दुनिया की ओर ले जाया है, जिसमें हम सूचनाओं की खान से जुड़ सकते हैं और जानकारी का बहुत सारा स्रोत है। इसके बिना हमारा जीवन सोचने के लिए अधूरा हो जाता।

इंटरनेट ने सूचनाओं की खान को एक सच्ची क्रांति का संकेत दिया है। पहले, सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए हमें पुस्तकें और समाचार पत्रिकाएँ ही उपलब्ध थीं, लेकिन अब हम इंटरनेट के माध्यम से जिस तरीके से सूचनाओं की खान से जुड़ सकते हैं, वह अद्भुत है। हम गूगल और अन्य खोज इंजन्स का उपयोग करके किसी भी विषय पर तुरंत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह एक महत्वपूर्ण तरीका है जिससे हम अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं और समय की बचत कर सकते हैं।

इंटरनेट से हमें अनगिनत सूचना स्रोत मिलते हैं। हम विभिन्न वेबसाइट्स, वेब पोर्टल्स, ब्लॉग, सोशल मीडिया, और अन्य स्रोतों से सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ तक कि हम अपनी रुचि और आवश्यकताओं के हिसाब से विशेष तरीके से समाचार और जानकारी तक पहुँच सकते हैं। इससे हमारा ज्ञान बढ़ता है और हम अपनी रुचियों के हिसाब से जानकारी चुन सकते हैं।

इंटरनेट के आगमन के साथ हमें सजगता और विवेकपूर्णता की आवश्यकता हो गई है। इंटरनेट पर आपको अनगिनत जानकारी मिलती है, लेकिन यह भी असत्य और दुर्भाग्यपूर्ण जानकारी से भरा हो सकता है। इसलिए हमें सच्चाई की पुष्टि करने के लिए और सही जानकारी प्राप्त करने के लिए सजग रहना चाहिए। हमें जानकारी के स्रोत की पुष्टि करनी चाहिए और अपने सोचने की क्षमता का प्रयोग करना चाहिए ताकि हम सही और सत्य की ओर बढ़ सकें।

13. बी-76,
कैलाशपुरी, दिल्ली।
27 फरवरी, 2019
महाप्रबंधक महोदय,
(प्रचार एवं प्रसार)
दूरदर्शन केंद्र, नई दिल्ली।

विषय- सुंदर और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रसारित करने के विषय में

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान आजकल दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। श्रीमान जी दूरदर्शन पर प्रस्तुत कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जिनमें शैक्षिक, गुणवत्ता, नैतिकता, सामाजिकता का नाम तक नहीं है। इसके अलावा इन कार्यक्रमों की तकनीकी गुणवत्ता भी अत्यंत घटिया है। इनकी भाषा तो फूहड़पन की हद पार कर जाती है। अनेक धारावाहिकों में हिंसा और बलात्कार के दृश्यों की भरमार रहती है। इन धारावाहिकों में अंतरंग दृश्यों को फूहड़ता के साथ दिखाया जाता है कि घर-परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर देखना मुश्किल हो जाता है। इनका सर्वाधिक दुष्प्रभाव युवाओं और छात्रों पर पड़ता है, जिनका कोमल मस्तिष्क इन बुराइयों को आसानी से अपना लेता है। इन युवाओं से सभ्य नागरिक बनने की आशा कैसे की जाए। अतः आपसे प्रार्थना है कि स्वस्थ समाज की रचना के लिए स्वस्थ मानवीय गुणों को विकसित करने वाले तथा ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का प्रसारण करें जिससे भारतीय संस्कृति की महत्ता बनी रहे।

सधन्यवाद।
भवदीय,
मोहित शर्मा

अथवा

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
प्रगतशील उच्च माध्यमिक विद्यालय
सागर

विषय: हॉकी प्रशिक्षण की व्यवस्था हेतु निवेदन।

महोदय,

मैं सुशील / सुशीला, कक्षा 10वीं का छात्र/छात्रा, आपसे निवेदन करता/करती हूँ कि हमारे विद्यालय में हॉकी प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। हमारे विद्यालय के कई विद्यार्थी हॉकी खेल में रुचि रखते हैं, लेकिन उचित प्रशिक्षण के अभाव में वे अपने कौशल को सुधार नहीं पा रहे हैं।

यदि हमारे विद्यालय में एक अनुभवी हॉकी कोच की व्यवस्था की जाए, तो इससे विद्यार्थियों की खेल क्षमता में सुधार होगा और हमारे विद्यालय का नाम भी रोशन होगा। कृपया इस अनुरोध पर ध्यान दें और शीघ्र आवश्यक कदम उठाएँ।

धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी छात्र
सुशील / सुशीला
कक्षा - 10वीं

14. प्रति,
प्रबंधक
सुविधा इलेक्ट्रॉनिक्स प्रा० लिमिटेड
जालधर पंजाब।

SATISH SCIENCE ACADEMY

विषय- मार्केटिंग एक्जक्यूटिव पद के लिए आवेदन-पत्र।
महोदय,
चंडीगढ़ से प्रकाशित दिनांक 05 मई, 20xx के पंजाब केसरी समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि सुविधा इलेक्ट्रॉनिक्स को कुछ मार्केटिंग एक्जक्यूटिव की आवश्यकता है स्वयं को इस पद के योग्य समझते हुए मैं अपना आवेदन-पत्र प्रेषित कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-
नाम - गौरव सैनी
पिता का नाम - श्री सौरभ सिंह सैनी
जन्मतिथि - 10 जुलाई, 1992
पता - बी/25, राजा गार्डन, दिल्ली।
शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई०	2006	62%
बारहवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई०	2008	73%
बी.बी.ए.	पंजाब टेक्नीकल विश्वविद्यालय	2011	70%
एम.बी.ए.	पंजाब विश्वविद्यालय	2013	73%

अनुभव- फेना डिटर्जेंट कंपनी में एक वर्ष का अनुभव।
आशा है कि आप सेवा का अवसर प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।
धन्यवाद
गौरव सैनी
हस्ताक्षर .....
संलग्न- शैक्षणिक तथा प्रशिक्षण संबंधी प्रपत्रों की छाया प्रति।

अथवा

From: pawan@mycbseguide.com
To: dyancsz@mcd.org.in
CC ...
BCC ...
विषय - पार्क में खोमचे वालों को हटाने हेतु
महोदय,
मैं गोविन्द नगर का रहने वाला हूँ तथा वार्ड की स्वच्छता समिति का अध्यक्ष हूँ। मैं आपका ध्यान बस्ती के पार्क में खोमचे वालों द्वारा अनधिकृत डेरा डालने की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दिन-प्रतिदिन पार्क की स्थिति खराब होती जा रही है। बच्चों को खेलने और बड़े-बूढ़ों को टहलने के लिए जगह नहीं मिल रही है। वे लोग इस पार्क में कचरा फेंक कर इस पार्क को दूषित कर रहे हैं।
महोदय, गोविन्द नगर, वार्ड की स्वच्छता समिति का सुझाव है कि बस्ती के पार्क से खोमचे वालों को हटाने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाए। यदि आवश्यक हो तो इनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही भी की जाए। इससे समस्त निवासियों को लाभ मिलेगा और हमारा पर्यावरण भी प्रदूषण मुक्त हो जाएगा।
पवन

15.

आपके दाँतों को रखे चमकदार, ताज़गी को सदा रखे बरकरार

चमक दंत टूथपेस्ट

चमक दंत टूथपेस्ट की विशेषताएँ-

- **सबसे सस्ता, सबसे अच्छा**
- **मजबूत दाँत**
- **स्वस्थ मसूड़े**
- **दुर्गंध से छुटकारा**
- **कीटाणुओं का सफाया**
- **दाँतों के पीलेपन से छुटकारा**
- **दांतों के दर्द से आजादी**

मूल्य सिर्फ़ 10 से 35 रूपए तक
सभी मुख्य स्टोर पर उपलब्ध

SATISH SCIENCE ACADEMY

अथवा

संदेश

13 अक्तूबर, 2020
प्रातः 11:52 बजे
हमारे नवनिर्वाचित सांसद श्री गिरीश सिंह जी को हार्दिक बधाई। ऊपरी सदन में आपकी उपस्थिति से हमारे क्षेत्र एवं देश के कल्याणकारी मुद्दों को बल मिलेगा। विकास और जनकल्याण का मार्ग सुगम होगा। आपके राजनीतिक अनुभव और ज्ञान का लाभ हमारे क्षेत्र को प्राप्त होगा। आप क्षेत्र में रुके पड़े विकास के कार्य को फिर से पटरी पर लाएंगे। गुंडागर्दी और भ्रष्टाचार खत्म होगा। किसानों, मजदूरों व युवाओं को उनका हक मिलेगा। आपकी जीत से हमारे क्षेत्र की नव निर्माण की राह खुलेगी।
समस्त क्षेत्रवासी

SATISH SCIENCE ACADEMY